करघे की खट-खट, वस्त्रों में लिपटा सात सदियों का इतिहास

शशि ठाकुर • जागरण

- जनपथ के आइजीएनसीए में लगाई वस्त्र प्रदर्शनी
- सातवीं से 20 वीं शताब्दी के कालखंडों की कहानी को दर्शाया

जनपथ में आइजीएनसीए में अभिव्यक्ति ,वस्त्र प्रदर्शनी देखती युवतिया • हरीश कुमार

नई दिल्ली: कहते हैं कि भारत को समझना हो तो यहां के करघे की खट-खट, धागों के ताने-बाने और रंगों के संबंधों को समझना होगा। जनपथ के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आइजीएनसीए) में 'अभिव्यक्ति-एक्सप्रेशन आफ द लूम फ्राम द वाल्ट आफ ए विजनरी' नाम से वस्त्र प्रदर्शनी के सातवीं शताब्दी से लेकर 20 वीं शताब्दी के कालखंडों की कहानी को दर्शाया गया है।

प्रदर्शनी में कलात्मक बुनाई और विविध रंगों के वस्त्र सहस्त्राब्दियों के इतिहास को अपने भीतर समेटे हुए हैं। यहां एक तरफ 12वीं शताब्दी की जामदानी अपनी सूक्ष्मता से बंगाल की नजाकत बयां कर है तो दूसरी तरफ नक्शी कांथा के टांकों में पूर्व-वैदिक काल की स्मृतियां आज भी सांस ले रही हैं। ये वस्त्र प्रदर्शनी 7 जनवरी तक चलेगी।

गुजरात की 'माता- नी-पछेड़ी और कच्छ का कौशल : यहां गुजरात की गलियों से आई 'माता-नी-पछेड़ी' की प्रदर्शनी वाघरी समुदाय के प्रतिरोध और अटूट विश्वास की एक पावन गाथा प्रस्तुत कर रही है। 17वीं शताब्दी की कलमकारी और ब्लाक प्रिंटिंग में उभरता देवी का स्वरूप कला और अध्यात्म के बीच का भेद मिटा रहा है। इसके अलावा कच्छ की हड्डियों को कंपा देने वाली हवा को मात देती वणकर समुदाय की भुजोड़ी और धाबला शाल ऊन और ब्रोकेड का जादुई कौशल है, जो 15वीं सदी से लेकर आधुनिकता के दौर में जीवित है, जो विरासत की तरह पिता से पुत्रों को मिल रही है।

मिट्टी की सोंधी महक और रंगों का उत्सव ओडिशा के मिरगन आदिवासियों का कोटपाड़ हैंडलूम हो या भुलिया समुदाय की बोमकाई साड़ी, इनका हर धागा प्रकृति और इंसान के गहरे जुड़ाव की कहानी कह रहा है। यहां बोमकाई में रेशम का राजसी वैभव झलक रही है।

वहीं महाराष्ट्र की वारली पेंटिंग अब दीवारों की परिधि को लांघकर सिल्क की साड़ियों पर अपनी जनजातीय कला का जादू बिखेर रही है।

Scanned with CamScanner